# केंरेअप्रसं, मैसूरु में दि. 28 अक्तूबर 2017 को संपन्न अनुसंधान परिषद की बैठक के कार्यवृत्त

मुख्य संस्थान एवं इसके संबंद्ध एककों के नए परियोजना प्रस्तावों/ अवधारणाओं, चालू परियोजनाओं / कार्यक्रमों की प्रगति एवं समाप्त अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा करने हेतु केंरेअप्रसं, मैसूरु के अनुसंधान परिषद की 60वीं बैठक दि. 28 अक्तूबर 2017 को संपन्न हुई । प्रोफेसर एस.आर. निरंजना, उप कुलपति, गुलबर्गा विश्वविद्यालय व नई गठित अनुसंधान सलाहकार समिति के अध्यक्ष ने समिति की अध्यक्षता की । प्रतिभागियों की सूची अनुबंध I में संलग्न है ।

डॉ वी. शिवप्रसाद, निदेशक, केंरेअप्रसं, मैसुरू ने संस्थान तथा वैज्ञानिकों की तरफ से अ.स.स. के अध्यक्ष प्रोफेसर एस आर निरंजना का स्वागत किया । उन्होंने संस्थान तथा संबंद्ध एककों के वैज्ञानिकों को भी बैठक में स्वागत किया । निदेशक ने समिति को सूचित किया कि अ.स.स. के अध्यक्ष ने दि. 27 व 28 नवंबर 2017 को अ.स.स. की अगली बैठक आयोजित करने हेतु सहमति दी है और तत्संबंधी परिपत्र शीघ्र ही जारी किया जाएगा । आगे, निदेशक ने सूचित किया कि पिछले हफ्ते अध्यक्ष एवं निदेशक ने केंरेबो, बेंगलूरु में असस की बैठक में भाग लिया । बैठक के दौरान नई परियोजनाओं के अनुमोदन हेतु अपनाई जाने वाली क्रियाविधियों पर कई निर्णय लिए गए । तदनुसार प्रोफेसर निरंजना ने वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तावित नई अवधाराणाओं के प्रस्तुतीकरण का अवलोकन करने तथा अगली कार्रवाई हेतु उन्हें अनुमोदन देने की जिम्मेहारी स्वीकार की । अनुसंधान परिषद द्वारा अनुमोदित अवधारणाओं को अनुमोदनार्थ केन्द्रीय कार्यालय को भेज देंगे इसके बाद परियोजना तैयार करके विशेषज्ञों की टिप्पणी लेकर असस के समक्ष प्रस्तुत करेंगे और उनकी सिफारिशों को आगे की कार्रवाई हेतु केन्द्रीय कार्यालय को भेजेंगे । असस प्रस्तावों पर विचार करके कोड संख्या प्रदान करने हेतु अनुमोदन देंगे। निदेशक ने सभी वैज्ञानिकों की तरफ से उन्हें पुष्पगुच्छ देते हुए फिर एक बार बैठक में उनका स्वागत किया ।

प्रारंभ में असस के अध्यक्ष प्रोफेसर निरंजना ने असस के अध्यक्ष के रूप में उन्हें चयन करने हेतु धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि उन्होंने वनस्पति विज्ञान / जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र में पिछले 25-26 वर्षों तक मैसूर विश्वविद्यालय में कार्य किया है और केंरेअप्रसं, मैसूरु के वैज्ञानिकों के साथ मिलजुलकर काम करने का अवसर मिला है । उन्होंने वैज्ञानिकों को सलाह दी है कि अवधारणा के लिए केन्द्रीय कार्यालय से अनुमोदन प्राप्त करके दो महीने के अंदर विस्तृत परियोजना प्रस्ताव तैयार करें । इसके बाद विशेषज्ञों की समीक्षा के आधार पर असस के विचारार्थ परियोजना की सिफारिश करेगी और अंत में असस कार्यान्वयन हेतु परियोजना के लिए अनुमोदन देगी । तदनुसार असस सितंबर और फरवरी की बैठकों के पहले नई परियोजनाओं को अंतिम रूप देगी । इस संदर्भ में मैं निम्नलिखित अवधाराणाओं पर चर्चा करूँगा ।

उन्होंने यह भी बताया कि उद्योग उन्मुख अनुसंधान समय की माँग है और यह एक नया उभरता क्षेत्र है । हमें परंपरागत अनुसंधान पर केंद्रित होकर नहीं रहना है । अनुसंधान परियोजनाएँ अनुप्रयोग उन्मुख होनी चाहिए, तथापि बुनियादी प्रक्रिया समझने हेतु आण्विकी सिद्धांतों को अपनाना आवश्यक है । उन्होंने वैज्ञानिकों को सलाह दी कि शोध पत्रों को प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाए जिसका प्रभाव रेशम उत्पादन पर पडेगा, उन्होंने असस की राय व्यक्त की है कि वैज्ञानिक संस्थान की तथा अन्य संस्थानों के सहयोग से चलाई जा रही परियोजनाओं, संकाय परियोजनाओं, समन्वित परियोजनाओं तथा प्रतिबल क्षेत्रों में नेटवर्क परियोजनाएँ तैयार करें । उन्होंने कृषकों के लाभ के लिए अच्छी प्रौद्योगिक विकसित करने में केंरेअप्रसं, मैसूरु के प्रयासों की सराहना की । उन्होंने यह भी सूचित किया कि केंरेअप्रसं, मैसूरु में फरवरी 2018 के अंतिम संप्ताह के दौरान असस की बैठक होगी । उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों से मिलने का अवसर प्रदान करने हेतु केंरेअप्रसं, मैसूरु को धन्यवाद ज्ञापित किया ।

सभी प्रतिभागियों ने असस के अध्यक्ष को अपना परिचय दिया ।

**21 मार्च 2017 को संपन्न 59वीं  बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि :** जैसाकि किसी भी सदस्य से कार्यवृत्त पर कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई अत: अ.प. की 59वीं बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की गई ।

**पिछली बैठक के निर्णयों पर कृत कार्रवाई :** पिछली बैठक के निर्णयों पर कृत कार्रवाई से समिति को अवगत किया गया और चालू वर्ष के दौरान निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने तथा नई परियोजनाएँ प्रारंभ किए वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की गई ।

**विचारार्थ प्रस्तावित नई अवधारणाओं / परियोजनाओं की समीक्षा ।**

कार्यसूची के अनुसार अवधारणा टिप्पणियों की समीक्षा करते हुए उन पर विस्तृत रूप से विचार विमर्श किए गए । असस के अध्यक्ष आचार्य एस.आर. निरंजना, ने प्रधान अन्वेषकों के साथ सक्रिय रूप से चर्चा की और प्रस्तुतीकरण समाप्त होते ही परियोजना को सुधारने हेतु आवश्यक सुझाव दिए । परियोजनावार लिए गए निर्णय निम्नानुसार है :

**1) रेशमकीट पीडक उजीमक्खी, एक्सोरिस्टा, बोम्बिसिस के विरुद्ध फेरोमोन ट्रैप का प्रदर्शन और लोकप्रियकरण (प्रौ.स्था.)**

**निर्णय :** समिति ने अवधारणा टिप्पणी की आलोचना करके इसे "दीर्घकालीन ऊजी समस्या के प्रबंधन हेतु विकसित प्रौद्योगिकी के व्यापक मूल्यांकन" पर समाप्त परियोजना के शेष कार्य के रूप में प्रौद्योगिकी स्थानांतरण परियोजना के अंतर्गत अनुमोदन दिया । एनबीआईएआर एवं डीओएस के सहयोग से उत्पाद के वाणिज्यीकरण और लागत लाभ अनुपात निर्धारित करने का कार्य भी सम्मिलित करने का सुझाव दिया गया है । आगे, अन्वेषक को सुझाव दिया गया कि कितने फसलों को सम्मिलित किया जाना है इसके आधार पर बजट में संशोधन करें तथा एक हफ्ते के अंदर प्रस्ताव को पूर्ण रूप से तैयार करें ।

(**कार्रवाई** : श्री जे.बी. नरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक डी पी.प्र.प्र)

**2) ऊजी मक्खी के विरुद्ध जैव नियंत्रण कारक के रूप में ट्राइकोमैलोप्सिस ऊजीये की प्रभावकता का मूल्यांकन और व्यापक उत्पादन प्रौद्योगिकी का विकास**

**निर्णय :-** समिति ने अवधारणा टिप्पणी पर चर्चा की और यह सुझाव देते हुए अनुमोदन दिया कि ट्राइकोमैलोप्सिस की परजीविता के डाइनमिक्स को परियोजना के उद्देश्य के रूप में सम्मिलित करने को कहा । इस संबंध में प्रारंभिक कार्य करने को कहा गया । प्रधान अन्वेषक को फरवरी 2018 तक प्रस्ताव प्रस्तुत करने का सुझाव दिया गया ।

(**कार्रवाई :** श्री जे.बी. नरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक डी, पी.प्र.प्र.)

**3. मैक्रोनोल्लिकोक्कस हिरसुटस (ग्रीन 1908) (हेमिप्टेरा प्स्यूडोसीडे) के सक्षम परजीव्याभो (पैरासिटॉइड) की पहचान एवं शहतूत में जैव नियंत्रण हेतु (एनबीआईआर, बेंगलूरु के सहयोग से) संवर्धन ।**

**निर्णय :** समिति ने अवधारणा टिप्पणी पर समालोचना करते हुए चर्चा की और एनबीएआईआर के वैज्ञानिकों के साथ चर्चा करके आवश्यक संशोधन करने का सुझाव दिया जैसाकि इसमें परिजीव्याभो का व्यापक उत्पादन करने की गुंजाइश है । प्रधान अन्वेषक को बजट परिकलित करके प्रस्ताव को केन्द्रीय कार्यालय के समाशोधन हेतु भेजने का सुझाव दिया गया ।

(**कार्रवाई :** डॉ एस. महिबा हेलन, वैज्ञानिक सी, क्षेरेअकें)

**4. रेशम उत्पादन से संबंद्ध मोलिक्यूलार एपीजेनेटिक प्रक्रिया और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया का विस्तृत विश्लेषण**

**निर्णय :** समिति ने अवधारणा टिप्पणी पर चर्चा की और उसके लिए अनुमोदन दिया जैसाकि यह प्रस्ताव एपीजेनेटिक स्तर पर विषाणु परपोषी पर्यावरण प्रतिक्रिया पर केन्द्रित है । प्रधान अन्वेषक को सुझाया गया कि डॉ ज्योति सिंह (एनसीएल), पुणे और डॉ के.एम. पोन्नुवेल, (एसबीआरएल, बेंगलूरु) के परामर्श से विस्तृत प्रस्ताव तैयार करें । प्रधान अन्वेषक को सुझाया गया था कि प्रस्ताव को केन्द्रीय कार्यालय के अनुमोदनार्थ भेज दे ताकि उसे अगली असस की बैठक में प्रस्तुत किया जा सके ।

(**कार्रवाई :** डॉ रंजिनी एस.एस., वैज्ञानिक बी, द्वि.प्र.प्र.)

**5. वाष्पीकरण तकनीक से रेशमकीट बीज का सतह विसंक्रमण**

**निर्णय :** समिति ने अवधारणा टिप्पणी पर चर्चा की और उसे प्रारंभिक अध्ययन के रूप में अनुमोदन दिया है जैसाकि अवधारणा को ठीक तरह नहीं बनाया गया है और उद्देश्य के अनुरूप नहीं है प्रधान अन्वेषक को सुझाया गया कि प्रारंभिक कार्य के आधार पर व्यावहारिक मॉडल तैयार करें ।

**(कार्रवाई :** डॉ ए.आर. नरसिंह नायक, वैज्ञानिक डी, रे.रो.वि.)

**6. रेशम उत्पादन में प्रभावी ढंग से सफाई का प्रबंध करने हेतु फेनोलिक संयुक्त का मान्यकरण (उद्योग प्रायोजित परियोजना)**

**निर्णय :** समिति ने इस आशय की समालोचना की और केन्द्रीय कार्यालय द्वारा उद्योग प्रायोजित परियोजनाओं के लिए निर्धारित दिशा निर्देशों के अनुसार प्रस्ताव में संशोधन करने का सुझाव दिया । प्रधान अन्वेषक को सुझाया गया कि केन्द्रीय कार्यालय के समाशोधन हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत करें और 25 नवंबर 2017 को अ.स.स. के समक्ष प्रस्तुत करें ।

**(कार्रवाई :** डॉ मेरी जोसेफा शेरी, वैज्ञानिक डी, रे.रो.वि.)

**7. ट्रैन्सोवेरियल्ली और गैर ट्रैन्सोवेरियल्ली संक्रमित पेब्रिन रोग कारकों का तुलनात्मक जीनोमिक विश्लेषण**

**निर्णय :** समिति ने अवधारणा टिप्पणी पर चर्चा की और उसके लिए अनुमोदन दिया जैसाकि इसे रेशमकीट में नोसेमा संक्रमण को पहचानने / अलग करने / प्रबंधन करने हेतु उपयोग किया जा सकता है । प्र.अ.को सुझाया गया कि विभिन्न नोसेमा प्रजातियों का बीजाणु संवर्ध विकसित करें और ट्रैन्सोवेरियल और गैर ट्रान्सोवेरियल को अलग करने हेतु पूरा जीनोम अनुक्रम बनाएँ । प्रस्ताव को केन्द्रीय कार्यालय को भेजने को कहा गया ।

**(कार्रवाई :** डॉ जी. मल्लिकार्जुन, वैज्ञानिक बी, रे.रो.अ.)

**8) दक्षिण भारत में जी 4 शहतूत उपजाति को लोकप्रिय बनाना**

**निर्णय :** समिति ने अवधारणा टिप्पणी पर चर्चा की और उसे प्रौद्योगिकी स्थानांतरण परियोजना के रूप में अनुमोदन दिया । यह शहतूत उपजाति प्राधिकरण कार्यक्रम का शेष कार्य है (जी 4 को 25 अक्तूबर 2017 को दक्षिण अंचल के लिए प्राधिकृत किया गया) जिससे पर्याप्त बीज बागानों की संस्थापना की जा सके और दक्षिण भारत में बडे पैमाने पर जी 4 उपजाति को लोकप्रिय बनाया जा सके । प्रधान अन्वेषक से प्रस्ताव को एक हफ्ते के अंतर्गत प्रस्तुत करने को कहा गया ।

**(कार्रवाई :** डॉ बी.टी. श्रीनिवास, वैज्ञानिक डी, फार्म प्र अ)

**9. द्विप्रज नस्लों का उपयोग करते हुए उन्नत रेशम गुणवत्ता वाले बहुप्रज नस्लों का विकास**

**निर्णय :** समिति ने अवधारणा टिप्पणी की समालोचना की और इस सुझाव सहित परियोजना के लिए अनुमोदन दिया कि विचार विमर्श के आधार पर प्रस्ताव में संशोधन करें और प्रजनकों की बैठक में की गई सिफारिशों के अनुवर्तन के रूप में किया जाए । प्रधान अन्वेषक ने सुझाया कि प्रस्ताव को केन्द्रीय कार्यालय के अनुमोदन हेतु भेज दें और दि . 25 नवंबर 2017 तक अनुसंधान सलाहकार समिति के समक्ष प्रस्तुत करें ।

(**कार्रवाई :** डॉ के.वी. चंद्रशेखर, वैज्ञानिक डी, श.प्र.प्र.)

**10) विभिन्न कृषि जलवायु स्थितियों के अधीन उपज एवं अनुकूलनशीलता हेतु श्रेष्ठ त्रिगुणित जीन प्ररूपों का मूल्यांकन (बहु स्थानीय प्रयोग)**

**निर्णय :** अनुसंधान परिषद की पिछली बैठक में लिए निर्णयानुसार केन्द्रीय कार्यालय को प्रस्ताव भेज दिया गया था और निर्णायकों की टिप्पणी प्राप्त करने हेतु केन्द्रीय कार्यालय से अनुमोदन प्राप्त हुआ । प्रधान अन्वेषक ने निर्णायकों की टिप्पणी सहित परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किया (निर्णायक ने कार्यान्वयन हेतु सिफारिश की) अनुसंधान परिषद ने सुझाव दिया कि प्रस्ताव को अनुमोदनार्थ असस के समक्ष प्रस्तुत करें ।

(**कार्रवाई :** डॉ टी. मोगिली, वैज्ञानिक डी, रा.प्र)

**11. विदेशी और वन्य जननद्रव्य का उपयोग करते हुए उच्च उत्पादक और व्यापक तौर पर अपनाए शहतूत का विकास**

**निर्णय :** अनुसंधान परिषद के सुझाव के अनुसार अवधारणा टिप्पणी को अनुमोदनार्थ केन्द्रीय कार्यालय को भेज दिया गया था और अनुमोदन प्राप्त हुआ । निर्णायकों की टिप्पणी प्राप्त करने का सुझाव दिया गया । समिति ने परियोजना पर निर्णायकों की टिप्पणी पर चर्चा की और उसे अनुमोदनार्थ असस के समक्ष प्रस्तुत करने का कहा ।

(**कार्रवाई :** डॉ वैजयंती, वैज्ञानिक बी, आजीवि श्र - I)

**12. उप अनुकूलतम सिंचित स्थितियों में सूखा अनुकूली विशेषकों का उपयोग करते हुए विकसित संततियों से उन्नत उपज और अनुकूलनशीलता वाले श्रेष्ठ संकरों की पहचान पर प्राथमिक उपज मूल्यांकन ।**

**निर्णय :** अनुसंधान परिषद की पिछली बैठक में प्राप्त अनुमोदन के अनुसार अवधारणा टिप्पणी के लिए केन्द्रीय कार्यालय से अनुमोदन एवं निर्णायकों की टिप्पणी प्राप्त हुई और उसे अनुमोदनार्थ असस के समक्ष प्रस्तुत करने को कहा ।

(**कार्रवाई :** डॉ तनमय सरकार, वैज्ञानिक बी, श.प्र.प्र.)

**समाप्त एवं चालू परियोजनाओं की समीक्षा**

बैठक के दौरान निदेशक ने सूचित किया कि असस के अध्यक्ष की सहमति से असस की बैठक 27 व 28 नवंबर 2017 को आयोजित की जा रही है और असस की बैठक का परिपत्र सभी अनुभागों में परिचालित किया गया । संबंधित वैज्ञानिक प्रगति रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत करें । समय के अभाव में कार्यवृत्त एवं व्याख्यात्मक टिप्पणी तैयार करने हेतु असस की सामग्री प्राप्त होने के बाद चालू एवं नई परियोजनाओं पर विस्तृत रूप से अनुभागवार चर्चा की जाएगी ।

**1. वर्ष 2017-18 के दौरान समाप्त परियोजनाएँ**

| | कोड सं एवं शीर्षक | अवधि |
|---|---|---|
| 1 | पीआईबी - 3457 - दक्षिण भारत के रेशम उत्पादन क्षेत्रों के लिए मूल विगलन एवं मूल गांठ रोग को विशेष महत्व देते हुए रोग प्रतिरोधी एवं उत्पादक शहतूत जीन प्ररूप का विकास -। | जनवरी 2012 से दिसंबर 2017 तक |
| 2 | एआरपी 3519 – बीज एवं वाणिज्य फसलों में रेशमकीट रोग का अनुवीक्षण - ए.वी. मेरी जोसफ शेरी और एच.एम. शानबोग | अक्तूबर 2014 से मार्च 2018 तक |
| 3 | पीपीए 3549 - शहतूत पत्ती के दीर्घकालीन उत्पादन के लिए ज्यामितीय पौधारोपण के विशेष संदर्भ में आशोधित अंतरण का मूल्यांकन - विनोद कुमार यादव और एम. नोबल मोरिसन | जनवरी 2016 से दिसंबर 2017 तक |
| 4 | पीआरई 3546 - शहतूत पत्ती रॉलर डाइफेनिया पल्वेरुलेंटालिस का सेक्स फेरोमिन हेतु पहचान, अभिलक्षणन, संश्लेषण और क्षेत्र मूल्यांकन : जे.वी. नरेन्द्र कुमार - एन - मोरिसन, एन. भक्तवत्सलम और सुभाहरन (एन.बी.ए.आई.आर. बेंगलोर के सहयोग से) | जनवरी 2016 से दिसंबर 2017 तक |
| 5 | ए आर पी 3597 : रेशमकीट में नोसेमा बोम्बिसिस के संक्रमण के लिए लैंप तकनीक का मानकीकरण और विधिमान्यकरण - वी. शिवप्रसाद, श्री मल्लिकार्जुन, एल. सतीश, एस. मंदिरा मूर्ति और ए.वी. मेरी जोसफ | अक्तूबर 2016 से सितंबर 2017 तक |
| 6 | एम ओ ई 3564 - उत्तर कर्नाटक में रेशम उत्पादन पर सीपीपी का प्रभाव - रवीन्द्र एम. मट्टिगट्टी, एम.के. रघुनाथ, ए.वाई. श्रीनिवासुलु, वाई. सनत कुमार और रमेश कुमार | फरवरी 2016 से जनवरी 2018 तक |

| | | |
|---|---|---|
| 7 | एमओई 3565 - आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में शहतूत कोसा उत्पादन में उपज अंतराल पर अध्ययन - एम.ए. शांतन बाबू, जी.वी. प्रसाद, टी.वी.एस.एस. राव, पी.एस. रेड्डी, बी. श्रीनाथ और वी. शिवप्रसाद | फरवरी 2016 से जनवरी 2018 तक |
| 8 | एमओई 3562 - तमिलनाडु के द्विप्रज रेशम किसानों पर सीपीपी का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव - एस. राजकुमार, जे. रविकुमार, ई. राजलक्ष्मी, एन.जी. सेल्वाराजू, ए.जी.के. डेनियल, जी. पुनितावती और श्री हुमायूं शरीफ | फरवरी 2016 से जनवरी 2018 तक |
| 9 | पीआरपी 3567 - कीट/रोग/खरपतवार प्रबंधन में संस्तुत रसायनों के गुणों का आकलन और शहतूत पारिस्थितिक तंत्र, का मिट्टी बायोटा पर प्रभाव का अध्ययन - एस. बालसरस्वती, एस. राजकुमार, नोबल मारिसन, शांतनबाबू और एस.एन. पल्लवी | अप्रैल 2016 से मार्च 2019 तक |

2. 2017-18 में चालू परियोजनाओं की सूची

| क्र.सं. | परियोजना कोड और शीर्षक | अवधि |
|---|---|---|
| 1. | पीपीए 3552 - जैव रेशम के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी का विकास - वी.के. यादव, मेरी जोसफ, सिबयान सेन, शोभना, पी.सी. शांता और चंद्रशेखर | जनवरी - 2016 से दिसंबर 2018 तक |
| 2. | पीपीएस 3553 - शहतूत खेती में कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन और कार्बन सिक्वेस्ट्रेशन वृद्धि हेतु कार्यनीतियाँ - वेदव्यास, विनोद कुमार यादव, गायत्री और सिबयान सेन | जनवरी - 2016 से दिसंबर 2018 तक |
| 3. | एआईबी 3534 : रेशमकीट में समुन्नत संकर नस्लों का विकास - डॉ के.वी. चंद्रशेखर, सौदामिनी पी.वी., मेरी जोसफ और एम.एन. चंद्रशेखर | अप्रैल 2015 से मार्च 2019 तक |
| 4. | एआईवी 3509 : बी.एम.एनपीवी सहनशील द्विप्रज रेशमकीट नस्ल / संकर का उत्पादन और विकास - एस. मंदिरामूर्ति | जुलाई 2014 से दिसंबर 2018 तक |
| 5. | पीआईएन 3563 - पैदावार क्षमता, पोषक ग्रहण और उपयोग क्षमता के लिए समुन्नत शहतूत जीनप्ररूप का मूल्यांकन - टी. मोगिली, पी.वी. वैजयंती, सिबचिन सेन, पी. शोभना, ई. भुवनेश्वरी, वाई. तिरुपतय्या | फरवरी 2016 से मार्च 2019 तक |
| 6. | एआईबी 3561 : उच्च तापमान और उच्च आद्रता स्थितियों के लिए अनुकूल हृष्ट-पुष्ट द्विप्रज रेशमकीट की पहचान - एस. पुरुषोत्तम, डी.एस. सोमप्रकाश, विनीत कुमार और टीवीएस राव | फरवरी 2016 से मार्च 2019 तक |
| 7. | एआईबी 3537 : रेशमकीट प्रजनन के सुधार हेतु प्रयास, (इन्डो बुल्गेरिया सहयोग से) एस. मंदिरा मूर्ति और वी. शिवप्रसाद | जनवरी - 2015 दिसंबर 2019 तक |

| | | |
|---|---|---|
| 8. | एआईपी 3568 : शहतूत रेशमकीट के स्पेंट प्यूपा से मूल्यवर्धित उत्पाद का विकास (एनआईएएनपी के सहयोग से) वाई . तिरुपतय्या, ई. भुवनेश्वरी, एम. चंद्रशेखरय्या, एन.एम. सोरेन और के.एस. प्रसाद | मई 2016 से मार्च 2020 तक |
| 9. | पीपीए 3580 : दक्षिण भारत के रेशम उत्पादक किसानों के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड - शोभना वी, एस सेन, पी. सुधाकर, दाहिरा बीवि और बी. विजया नायडु | अप्रैल 2016से मार्च 2019 तक |
| 10 | पीआरपी 3591 - मूलगांठ निमटोड रोग के लिए शहतूत में प्रतिरोध शक्ति की पहचान - अरुण कुमार जी.एस. और टी. मोगिली | अक्तूबर 2016 से अक्तूबर 2019 तक |
| 11 | पीआईपी 3592 - शहतूत में जीवेतर दबाव सहिष्णुता की पहचान का सूचकांक - गायत्री टी.एस, गाँधी दास, राजशेखर के और तन्मय सरकार | अक्तूबर 2016 से सितंबर 2019 तक |
| 12 | एआईटी 3593 - ट्रांशकिष्टोम विश्लेषण के लिए आण्विक चिन्हक की गुणवत्ता हेतु पहचान - कुसुमा एल, एस. मंदिरामूर्ति और एम.एन. चंद्रशेखर | अक्तूबर 2016 से अक्तूबर 2019 तक |
| 13 | एआईपी 3594 सीआरसी में चॉकी कीटपालन सुधार हेतु अनुपूरक आहार पर अध्ययन - ई. भुवनेश्वरी, वाई. तिरुपतय्या, सी. परमेश्वर | अक्तूबर 2016 से मार्च 2019 तक |
| 14 | एमओई 3595 - कोसा पूर्व उद्यम हेतु रेशम व्यवसाय मॉडल का विकास - जायसी रानी डी और जयराम एच | अक्तूबर 2016 से अगस्त 2018 तक |
| 15 | एआईवी 3596 - द्विप्रज नस्लों / संकरों में बहुसंक्रामक रोग के विकास की सहिष्णुता - सतीश एल.आर., कुसुमा एल, | अक्तूबर 2016 से अगस्त 2020 तक |
| 16 | एआईटी 3556 - ट्रांशजेनिक बीएमएपीवी सहनशील रेशमकीट प्रभेदों पर बहुस्थानिक क्षेत्र परीक्षण का आयोजन और उनके विनियामक अनुमोदन के लिए सामान्य आंकड़ा । डीबीटी-बीआईआरएसी - सीडीएफडी, हैदराबाद के सहयोग से - वी. शिवप्रसाद और एस. मंदिरामूर्ति | दिसंबर 2015 से जून 2018 तक |
| 17 | एआईवी 3524 - उत्पादकता और रेशम गुणवत्ता के लिए शुद्ध मैसूर जाति का सुधार- एस.बी. कुलकर्णी, सौदामिनी पी.वी. और एम.एन. चंद्र शेखर | जनवरी 2015 से जून 2018 तक |
| 18 | पीआरपी 3567 - कीट / रोग / खरपतवार नियंत्रण में संस्तुत रसायनों का प्रभाव और शहतूत पारिस्थितिकी में मृदा बयोटा का प्रभाव - एस. बालसरस्वती, एस. राजकुमार, नोबल मारिसन, शांतन बाबू और एस.एन.पल्लवी | अप्रैल 2016 से मार्च 2019 तक |

| | | |
|---|---|---|
| प्रारंभ की गई नई परियोजनाओं की सूची | | |
| 1. | पीआईई 3511 - विशिष्टता, एकरूपता और स्थामित्व निरूपकों का विकास (डीयूएस) और उनक विधिमान्यकरण - चरण II (पीपीवीएवंएफआरए नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित) - वी. शिवप्रसाद, वी. गिरीश नायक, टी. मोगिली और पी.वी. वैजयंती | अप्रैल 2016 से मार्च 2019 तक |
| 2. | पीआरपी 3618 - दक्षिण भारत के राज्यों के रेशम किसानों में शहतूत के मूलगांठ रोग प्रबंधन हेतु रॉट फिक्स लोकप्रियकरण । प्रतीश कुमार पी.एम., एस. राजकुमार, एच. जयराम, टी.वी. श्रीनिवासराव और ए. वेणुगोपाल | जुलाई 2017 से जून 2019 तक |
| 3. | पीआईसी 3615 - शहतूत में क्षारीय सहिष्णुता के लिए क्यू.टी.एल. मापन । - पी.वी. वैजयंती, टी. मोगिली, महालिंगप्पा के.सी. और सनत कुमार वाई.एन. | अगस्त 2017 से फरवरी 2021 तक |
| 4. | पीआईसी 3620 - जलवायु परिवर्तन अनुकूलता हेतु शहतूत में प्रकाश संश्लेषण अभियांत्रिकी - एक सी 4 दृष्टिकोण - तन्मय सरकार, प्रो ए.एस. राघवेन्द्र, हैदराबाद विश्वविद्यालय, टी. मोगिली, एस. गाधी दॉस, गायत्री टी और अरुण कुमार जी.एस (हैदराबाद वि.वि. के सहयोग से) | अगस्त 2017 से जुलाई 2021 तक |
| 5. | एमओई 3621 - महिला लाभार्थियों पर सीपीपी का सामाजिक आर्थिक और संचार पहलुओं पर प्रभाव - जी.एस. गीता, जॉयसी रानी, विद्युनमला और पुनितावती | सितंबर 2017 से अगस्त 2019 तक |
| केन्द्रीय रेशम बोर्ड के अन्य संस्थानों द्वारा चालू सहयोगी परियोजनाओं की सूची | | |
| | परियोजना कोड और शीर्षक / अवधि | संस्थान |
| 1. | एआरपी 3605 - (डीवीटी) एनपीवी सहनशीलता से संबंद्ध डीएनपी चिहनकों के इंटीग्रेशन द्वारा विकसित रेशमकीट नस्ल में डीएनए चिहनक का विधिमान्यकरण और नस्लों का बडे पैमाने पर क्षेत्र परीक्षण - एस.एम. मूर्ति (मार्च 2017 - फरवरी 2020) | एसबीआरएल, बेंगलूर केंरेअप्रसं, पाम्पोर, केंरेअप्रसं, बरहमपुर |
| 2. | एआईबी 3578 - आशाजनक पैतृक वंशानुगत संसाधनों को पहचानने के लिए विदेशी द्विप्रज रेशमकीट नस्लों का मूल्यांकन - किशोर कुमार व सौदामिनी (जून 2016 - सितंबर 2019) | सीएसजीआरसी, होसूर, केंरेअप्रसं, बरहमपुर केंरेअप्रसं, मैसूरु, केंरेअप्रसं, पाम्पोर |

| | | |
|---|---|---|
| 3. | पीआईई 3577 - जलवायु परिवर्तन अनुकूलता हेतु दक्षिण और पूर्वी भारत के लिए संकर नस्ल विकसित करते हेतु सक्षम जनकों को पहचानने हेतु द्विप्रज जननद्रव्य का मूल्यांकन - चंद्रशेखर बी.के. और एस.बी. कुलकर्णी (मार्च 2016 - फरवरी 2019) | सीएसजीआरसी, होसूर, केंरेअप्रसं, बरहमपुर केंरेअप्रसं, मैसूरु |
| 4. | पीआईई 3575 - जलवायु परिवर्तन के अनुकूल क्रियात्मक विशेषताओं के लिए शहतूत के वंशानुगत संसाधनों का मूल्यांकन - टी.एम. मोगिली (मई 2016 - अगस्त 2019) | सीएसजीआरसी, होसूर, केंरेअप्रसं, बरहमपुर केंरेअप्रसं, मैसूरु |
| 5. | सीवाईआर 7078 - सेरिसिन विघटन विशेषताओं पर अध्ययन - एम.एन. चंद्रशेखर (जनवरी 2016 - जनवरी 2018)) | केंरेप्रअसं, बेंगलूर |
| 6. | एआरपी 3607 चॉकी कीटपालन केन्द्रों पर (बायोसेंसर आधारित पुष्टिबॉडी विकास) रेशमकीट वाइरसों की प्रारम्भिक एवं त्वरित पहचान - ए.वी. मेरी जोसेफ एवं एल. सतीश (मार्च 2017 - फरवरी 2020) | केंरेअप्रसं, पाम्पोर |

अनुसंधान सलाहकारी समिति के अध्यक्ष ने अनुसंधान समन्वय समिति के निर्णयों की पुनरावृत्ति की और सलाह दी कि मैसूरु में सी – 4 शहतूत की नई परियोजनाओं पर शोधकर्ताओं की बैठक का आयोजन करें और वर्तमान में आबंटितानुसार कार्यक्रम की व्यवहार्यता और निर्धारित समय के अंदर ही इसकी तैयारी पर चर्चा करें ।

(डॉ तन्मय सरकार, वैज्ञानिक बी, एमबीजी)

असस अध्यक्ष ने सभी वैज्ञानिकों के हित में सदन को सूचित किया कि अ.स.स. की अगली बैठक 27 एवं 28 नवंबर 2018 को सुनिश्चित की गई है और बैठक के आयोजन के लिए आवश्यक व्यवस्था करने हेतु निदेशक केंरेअप्रसं, मैसुरु को सलाह दी गई ।

(वैज्ञानिक डी, पीएमसीई)

धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक समाप्त हुई ।

बी. शिवप्रसाद

**अध्यक्ष, अनुसंधान परिषद**